रस

परिभाषा : रस का शाब्दिक अर्थ है "आनन्द"। काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे रस कहा जाता है। रस को काव्य की आत्मा मानी जाती है। रस के कारण ही कविता के पठन, श्रवण और नाटक के अभिनय देखने मेन आनन्द की अनुभूति होती है।

रस से जिस भाव की अनुभूति होती है वह रस का स्थायी भाव होता है। रस, छंद और अलंकार काव्य रचना के आवश्यक अवयव हैं।

1. पाठक या श्रोता के हृदय में स्थित स्थायीभाव ही विभावादि से संयुक्त होकर रस के रूप में परिणत होत है।
2. रस को काव्य की आत्मा या प्राण तत्व माना जाता है।

भरतमुनी द्वारा रस की परिभाषा :-

रस उत्पत्ति को परिभाषित करने का श्रेय सबसे पहले भरतमुनि को जाता है। उन्होने अपने "नाट्यशास्त्र" में रास रस के आठ प्रकारों का वर्णन किया है। रस की व्याख्या करते हुए भरतमुनी कहते हैं कि सब नाट्य उपकरणो द्वारा प्रस्तुत एक भावमूलक कलात्मक अनुभूति है। रस का केंद्र रंगमंच है। भाव रस नहीं अपितु उसका आधार है किन्तु भरत ने स्थायी भाव को ही रस माना है।

अन्य आचार्यों के अनुसार रस की परिभाषा :

1. आचार्य धनंजय के अनुसार रस की परिभाषा:
   चवभाव, अनुभाव, संचारित भाव और विभाव के संयोग से आस्वादमान स्थायी भाव ही रस है।
2. आचार्य विश्वनाथ ने रस की परिभाषा देते हुए लिखा है:
   चवभावेनानुभावेन विक: संचारी तथा।
   रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सतां हि सः॥
3. डॉ. विश्वनाथ के अनुसार रस की परिभाषा:
   भावों के छंदात्मक समन्वय का नाम ही रस है।
4. आचार्य श्याम सुंदर दास के अनुसार रस की परिभाषा:
   स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव एवं संचारी भावों के योग से आस्वादन करने योग्य हो जाता है, तब सहृदय प्रत्यक्ष के हृदय में रस रूप में उसका आस्वादन होता है।

Visit Thebachchantop.com To Learn More

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रस की परिभाषा:
   जिस भावात्मक आत्मा की मुक्तावस्था जाग्रत होती है, उसी भावात्मक हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।

रस के अंग :

रस के चार अवयव या अंग

हनी वाकर के अनुसार रस के चार प्रमुख अवयव या अंग होते हैं:

1. **विभाव**
2. **अनुभाव**
3. **संविचारी (संचारी) भाव**
4. **स्थायी भाव**

---

1. रस का विभाव

जो वस्तु, पदार्थ, या व्यक्ति किसी के हृदय में भावों को जाग्रत करते हैं, उन्हें **विभाव** कहते हैं। विभाव के आश्रय से ही रस प्रकट होता है। यह कारण चमत्कारी अथवा हेतु कहलाते हैं। विशेष रूप से भावों को प्रकट करने वाले कारणों को विभाव रस कहते हैं।

विभाव के प्रकार:

1. **आलंबन विभाव**
2. **उदीपन विभाव**

(i) आलंबन विभाव

जिसका आश्रय लेकर स्थायी भाव जागते हैं, वह **आलंबन विभाव** कहलाता है। जैसे – नायक-नायिका।
आलंबन विभाव के दो पक्ष होते हैं:

1. **आश्रयालंबन** – जिसके मन में भाव जागते हैं।
2. **विषयालंबन** – जिसके प्रति या जिसके कारण मन में भाव जागते हैं।

उदाहरण: यदि राम के मन में सीता के प्रति रति का भाव जागता है, तो राम **आश्रयालंबन** और सीता **विषयालंबन** होंगी।

Visit Thebachchantop.com To Learn More

(ii) उदीपन विभाव

वे वस्तुएँ या परिस्थितियाँ, जिनसे स्थायी भाव जाग्रत और प्रबल होते हैं, **उदीपन विभाव** कहलाती हैं।
उदाहरण:

- चाँदनी
- कोयल की कूक
- एकांत स्थान
- रमणीय उद्यान
- नायक-नायिका की शारीरिक विशेषताएँ

---

2. रस का अनुभाव

मनोगत भाव को व्यक्त करने के लिए किए गए शारीरिक विकार या क्रियाएँ **अनुभाव** कहलाते हैं। वाणी और अंगों के अभिनय द्वारा जो अर्थ प्रकट होते हैं, उन्हें अनुभाव कहते हैं।

अनुभावों की संख्या निश्चित नहीं है, परंतु आठ प्रमुख अनुभाव होते हैं, जिन्हें सात्विक भाव कहा जाता है:

1. स्तंभ (अकड़ जाना)
2. स्वेद (पसीना आना)
3. रोमांच (रोमांचित होना)
4. स्वर भंग (आवाज लड़खड़ाना)
5. कँपकँपी (शरीर काँपना)
6. विवर्णता (रंग पीला पड़ना)
7. अश्रु (आँसू आना)
8. प्रलय (मूर्छा आना)

---

3. रस का संचारी भाव

जो भाव स्थायी भावों के साथ मिलकर उनका पोषण करते हैं, उन्हें **संचारी (विभावचारी) भाव** कहते हैं। ये स्थायी भाव के साथ स्थायी नहीं होते, इसलिए इन्हें **विभावचारी भाव** भी कहा जाता है। इनकी संख्या 33 मानी जाती है।

33 संचारी भाव:

Visit Thebachchantop.com To Learn More

संचारी भाव के उदाहरण			
हर्ष	अपस्मार (भूलना)	आलस्य	उन्माद
चिंता	निर्वेद	तृष्णा	लज्जा
गर्व	असूया (ईर्ष्या)	शम	मद
जड़ता	उग्रता	धर्म	मरण
विभ्रम (भ्रमित होना)	निद्रा	व्रीडा (शर्म)	भय
स्मृति	संकल्प	स्वप्न	मति (बुद्धि)
व्याधि (रोग)	मोह	दीनता	ग्लानि
विषाद	शंका	उत्सुकता	आवेग
अवहित्था (प्रकट न करना)	-	-	-

---

4. स्थायी भाव

स्थायी भाव का अर्थ है – **प्रधान भाव**। प्रधान भाव वही हो सकता है, जो रस की अवस्था तक पहुँचता है। नाटक या काव्य में एक स्थायी भाव आरंभ से अंत तक होता है।

स्थायी भावों की संख्या 9 मानी गई है:

1. रति (प्रेम) – **श्रृंगार रस**
2. हास्य (हँसी) – **हास्य रस**
3. शोक (दुःख) – **करुण रस**
4. क्रोध (गुस्सा) – **रौद्र रस**
5. उत्साह (जोश) – **वीर रस**
6. भय (डर) – **भयानक रस**
7. जुगुप्सा (घृणा) – **बीभत्स रस**
8. विस्मय (आश्चर्य) – **अद्भुत रस**
9. शांति (संतोष) – **शांत रस**

बाद में दो अन्य स्थायी भाव जोड़े गए:

10. वात्सल्य (माता-पिता का प्रेम) – **वात्सल्य रस**
11. भक्ति (भगवान के प्रति प्रेम) – **भक्ति रस**

Visit Thebachchantop.com To Learn More

इस प्रकार, कुछ विद्वानों ने रसों की संख्या **11** तक मानी है।

क्रमांक	रस का नाम	स्थायी भाव	उदाहरण
1	श्रृंगार रस (Shringar Ras)	रति (प्रेम)	प्रेम गीत, विरह गीत
2	हास्य रस (Hasya Ras)	हास (हँसी)	कॉमेडी, व्यंग्य
3	करुण रस (Karun Ras)	शोक (दुख)	दुखद कहानियाँ, शोकगीत
4	वीर रस (Veer Ras)	उत्साह (साहस)	युद्ध वर्णन, वीर गाथाएँ
5	रौद्र रस (Raudra Ras)	क्रोध (गुस्सा)	युद्ध और संघर्ष के दृश्य
6	भयानक रस (Bhayanak Ras)	भय (डर)	भूत-प्रेत कथाएँ, डरावनी फिल्में
7	वीभत्स रस (Vibhats Ras)	जुगुप्सा (घृणा)	घिनौने दृश्य, युद्ध के भयंकर दृश्य
8	अद्भुत रस (Adbhut Ras)	विस्मय (आश्चर्य)	रहस्य, जादू, चमत्कारी घटनाएँ
9	शांत रस (Shant Ras)	निर्वेद (शांति)	योग, ध्यान, संतों की वाणी

हिन्दी में रसों की संख्या

हिन्दी में रसों की संख्या नौ है - वात्सल्य रस को दसवाँ एवं भक्ति रस को ग्यारहवाँ रस भी माना गया है। वात्सल्यता तथा भक्ति इनके स्थायी भाव हैं। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी द्वारा लिखित ग्रंथ *"भक्ति रस - पहला रस या ग्यारहवाँ रस"* में इस रस को स्थायित्व प्राप्त कराया गया है। इस प्रकार हिन्दी में रसों की संख्या ११ तक पहुँच जाती है।

हिन्दी में रस निम्नलिखित हैं :

1. **श्रृंगार रस** - *Shringar Ras in Hindi*
2. **हास्य रस** - *Hasya Ras in Hindi*
3. **रौद्र रस** - *Raudra Ras in Hindi*
4. **करुण रस** - *Karun Ras in Hindi*
5. **वीर रस** - *Veer Ras in Hindi*
6. **अद्भुत रस** - *Adbhut Ras in Hindi*
7. **वीभत्स रस** - *Veebhats Ras in Hindi*
8. **भयानक रस** - *Bhayanak Ras in Hindi*
9. **शांत रस** - *Shant Ras in Hindi*
10. **वात्सल्य रस** - *Vatsalya Ras in Hindi*
11. **भक्ति रस** - *Bhakti Ras in Hindi*

Visit Thebachchantop.com To Learn More

1. श्रृंगार रस (Shringar Ras)

नायक-नायिका के सौंदर्य तथा प्रेम संबंधी वर्णन को श्रृंगार रस कहते हैं। श्रृंगार रस को 'रसराज' या 'रसपति' कहा गया है। इसका स्थायी भाव 'रति' होता है।

उदाहरण:
बतरस लालि लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सोहै करै भौंहन हँसै, दैन कहै नच जाय।।

2. हास्य रस (Hasya Ras)

हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' है। वेशभूषा, भाषा, आचरण और विकृति को देखकर मन में जो प्रसन्नता उत्पन्न होती है, वह हास्य रस कहलाता है।

उदाहरण:
बुरे समय को देख कर गंजे तू क्यों रोय,
किसी भी हालत में तेरा बाल न बाँका होय।।

3. रौद्र रस (Raudra Ras)

इसका स्थायी भाव 'क्रोध' होता है। जब किसी व्यक्ति या वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग का अपमान करने अथवा अपने गुरुओं एवं प्रियजनों के प्रति अन्याय किए जाने पर क्रोध उत्पन्न होता है, तब रौद्र रस प्रकट होता है।

उदाहरण:
शिखर शत्रु के सुन बिन अर्जुन, क्रोध से जलने लगे।
सब शील अपना भूलकर, करतल युगल मलने लगे।।

4. करुण रस (Karun Ras)

इसका स्थायी भाव 'शोक' होता है। अपने प्रियजन के वियोग, विनाश, या प्रेमी से सदा के लिए बिछुड़ जाने की पीड़ा से उत्पन्न भावना करुण रस कहलाती है।

उदाहरण:
रही करकती हाय शूल-सी, पीड़ा उर में दशरथ के,
गहन ताप वेदना, व्रण, शाप कथा वे कह न सके।।

thebachchantop.com

Visit Thebachchantop.com To Learn More

5. वीर रस (Veer Ras)

इसका स्थायी भाव 'उत्साह' होता है। जब किसी वीरता से संबंधित घटना का वर्णन किया जाता है और मन में उत्साह उत्पन्न होता है, तो वह वीर रस कहलाता है।

उदाहरण:
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

6. अद्भुत रस (Adbhut Ras)

इसका स्थायी भाव 'आश्चर्य' होता है। जब किसी व्यक्ति के मन में विस्मय अथवा अचरजजनक वस्तुओं को देखकर हर्ष एवं अचंभे के भाव उत्पन्न होते हैं, तो अद्भुत रस कहलाता है।

उदाहरण:
देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया,
करबद्ध को वह बनी अचेतन, चल न सकी कोमल काया।।

7. वीभत्स रस (Veebhats Ras)

इसका स्थायी भाव 'जुगुप्सा' होता है। घृणित वस्तुओं, घटनाओं, या शरीर की विकृतियों को देखकर मन में उत्पन्न होने वाली घृणा एवं वितृष्णा वीभत्स रस कहलाती है।

उदाहरण:
आँखें निकाल उड़ जाते, कर भर उड़ कर आ जाते,
शव जीभ खींचकर कौवे, घुला-घुला कर खाते।।

8. भयानक रस (Bhayanak Ras)

इसका स्थायी भाव 'भय' होता है। जब किसी भयानक वस्तु, घटना, या प्रेत-आत्मा से डर उत्पन्न होता है, तो वह भयानक रस कहलाता है।

उदाहरण:
अबला यौवन के रंग उभार, चिड़ियों के चहलाते कंठाल,
खोपड़ी के चिकने काले बाल, केतु लिपटी काँस, पिसबार।।

thebachchantop.com

Visit Thebachchantop.com To Learn More

9. शांत रस (Shant Ras)

इसका स्थायी भाव 'निर्वेद (उदासीनता)' होता है। जब संसार से वैराग्य उत्पन्न होता है, और मनुष्य को मोक्ष का बोध होता है, तब शांत रस की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण:
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं;
सब अँधियारा मिट गया, जब दीपक देखा माहीं।।

10. वात्सल्य रस (Vatsalya Ras)

इसका स्थायी भाव 'वात्सल्य (अनुराग)' होता है। माता का पुत्र के प्रति प्रेम, गुरु का शिष्य के प्रति प्रेम, बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति स्नेह आदि वात्सल्य रस के अंतर्गत आते हैं।

उदाहरण:
बाल दशा सुख निर्बध जसोदा, पुछन-पुछन नैन बुलावत,
अँचरा-तर लै ढाकी सूर, प्रभु कौ दूध पियावत।।

11. भक्ति रस (Bhakti Ras)

इसका स्थायी भाव 'देव-रति' है। जब किसी व्यक्ति के मन में ईश्वर के प्रति अनुराग एवं भक्ति उत्पन्न होती है, तो वह भक्ति रस कहलाता है।

उदाहरण:
अँसुवन जल सिंची-सिंची, प्रेम-बेलि बोई,
मीरा की लगन लागी, होनी हो सो होई।।

यह सभी रस भारतीय काव्यशास्त्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और विभिन्न साहित्यिक कृतियों में व्यापक रूप से देखे जाते हैं।

thebachchantop.com

Visit Thebachchantop.com To Learn More

[अभ्यास प्रश्नों के लिए यहाँ क्लिक करें]

The Bachchantop

Thanks For Learning !

thebachchantop.com